भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान दिल्ली
पाक्षिक समाचार

सम्पर्क

खण्ड–XXIX अंक–2 31 जनवरी, 2024

भवानीशङ्करौ वन्दे श्रद्धाविश्वासरूपिणौ। याभ्यां विना न पश्यन्ति सिद्धाः स्वान्तःस्थमीश्वरम्।।

श्रद्धा और विश्वास के स्वरूप श्री पार्वती जी और श्री शंकर जी की मैं वन्दना करता हूं, जिनके बिना सिद्धजन अपने अन्तःकरण में स्थित ईश्वर को नहीं देख सकते। श्रीरामचरितमानस–1/2

गणतंत्र दिवस समारोह सम्पन्न

26 जनवरी, 2024 को 75वाँ गणतंत्र दिवस समारोह संस्थान के खेल परिसर में देश प्रेम से भरे वातावरण में पूरे जोश व उल्लास के साथ मनाया गया। समारोह के मुख्य अतिथि प्रो. रंगन बनर्जी ने नियत समय पर ध्वाजारोह करके कार्यक्रम का शुभारम्भ किया, तत्पश्चात राष्ट्रगान से पूरा परिसर गूंज उठा।

इस पावन अवसर पर विद्यार्थियों, सुरक्षा एकक के स्टाफ तथा संस्थान स्टाफ सदस्यों द्वारा परेड प्रस्तुत की गई, इसके उपरान्त खेलों में उत्कृष्ट प्रदर्शन के लिए विद्यार्थियों एवं स्टाफ को अवार्ड प्रदान किए गए। नर्सरी स्कूल के नन्हे–मुन्ने बच्चों द्वारा सामूहिक गान एवं नृत्य प्रस्तुती की गई। केन्द्रीय विद्यालय के बच्चों द्वारा देशभक्ति थीम पर लोक नृत्य एवं सामूहिक गान प्रस्तुत किए गए।

निदेशक का उद्‌बोधन (संक्षिप्त अनुदित सार)

निदेशक महोदय ने संस्थान के सभी संकाय, अधिकारियों, स्टाफ सदस्यों, विद्यार्थिगण व संस्थान के परिसरवासियों को 75वें गणतन्त्र दिवस के अवसर पर बधाई देते हुए कहा कि आप सभी को गणतंत्र दिवस पर सम्बोधित करते हुए मुझे हर्ष हो रहा है। गणतंत्र का अर्थ क्या है ? 26 जनवरी, 1950 से पहले हम ब्रिटिश संवैधानिक राजतंत्र के अधीन थे। वे हम पर शासन करते थे। 26 जनवरी, 1950 को भारत का संविधान लागू हुआ और हमे अपने राष्ट्रपति तथा प्रधानमंत्री को चुनने का मौका मिला। 75 वर्ष पहले आज ही के दिन हमने अपने संविधान का अंगीकार किया था।

हमें यह ध्यान में रखना होगा कि आई.आई.टी. दिल्ली के रूप में हमें देश विकास के लिए टेक्नोलॉजी प्रदान करने की जरूरत है जिसमें हमारा देश आर्थिक तथा प्रतिस्पर्धा दोनों में अग्रणी रहे। आप सभी संकायों, स्टाफ सदस्यों, विद्यार्थियों को इसमें बड़ी भूमिका निभानी है। हमें यह भी ज्ञात होना चाहिए कि हमारे संस्थान का स्थापना दिवस भी गणतंत्र दिवस के नजदीक अर्थात् 27 जनवरी, 1954 को है।

निदेशक महोदय ने कहा कि आबूधाबी में संस्थान का नया परिसर तैयार हो रहा है तथा पहले बैच की कक्षाएं सोमवार से शुरु होने जा रही हैं। इसे बेहतर बनाने के लिए बहुत काम करना बाकी है। हमारे सामने कई चुनौतियां हैं जिन्हें हम आप सभी के सहयोग से पूर्ण करने के लिए प्रयासरत हैं।

अंत में गणतंत्र दिवस के पावन अवसर पर निदेशक महोदय ने सभी को शुभकामनाऐं देते हुए कहा कि हम सभी को संस्थान के लक्ष्य (विजन) को पूरा करने, समग्र विकास करने तथा संस्थान को नई ऊंचाईयों तक ले जाने के लिए प्रयासरत रहते हुए देश हित में योगदान करने की दिशा में कार्य करते रहना है।

जय हिन्द !

–डॉ. नीरज चौरसिया

बधाई (चयन/पदोन्नति)

स्थापना अनुभाग–1 से प्राप्त विज्ञप्ति के अनुसार निम्नलिखित संकाय सदस्यों को उनके नाम के आगे दिए गए पद के लिए चयनित/पदोन्नत किया गया है–

संकाय सदस्य का नाम	पिछला पदनाम	नया पदनाम	विभाग/केन्द्र	वेतनमान
प्रो. वरूण राममोहन	सहायक प्रोफेसर	सह प्रोफेसर	यांत्रिक इंजीनियरी	₹ 1,39,600–2,11,300 (लेवल–13ए2)
प्रो. (सुश्री) बहनी रे	सहायक प्रोफेसर	सह प्रोफेसर	यांत्रिक इंजीनियरी	₹ 1,39,600–2,11,300 (लेवल–13ए2)
प्रो. वामसी कृष्णा चालामल्ला	सहायक प्रोफेसर	सह प्रोफेसर	अनुप्रयुक्त यांत्रिकी	₹ 1,39,600–2,11,300 (लेवल–13ए2)

स्वागत

- स्थापना अनुभाग–I से प्राप्त विज्ञप्ति सं. IITD/IES1/2024/235393 दिनांक 17.01.2024 के अनुसार **प्रो. संजय पुरी** ने 15.01.2024 से संस्थान के भौतिकी विभाग में 2 वर्ष की अवधि के लिए अनुबद्ध संकाय के रूप में कार्यभार ग्रहण किया है।

सेवानिवृत्तियाँ

संस्थान के निम्नलिखित संकाय एवं स्टाफ सदस्य अधिवर्षिता की आयु होने पर 31 जनवरी, 2024 को अपराह्न में संस्थान से सेवानिवृत्त हो रहे हैं :–

प्रो. वी. रविशंकर, प्रोफेसर, भौतिकी विभाग

प्रो. वी. रविशंकर ने 26.06.2014 को संस्थान में प्रोफेसर के रूप में कार्यभार ग्रहण किया था। संस्थान में कार्यभार ग्रहण करने से पूर्व आपने 1989 से 2014 तक भा.प्रौ.सं., कानपुर में अपनी सेवाएं प्रदान की।

विनम्र स्वभाव के प्रो. वी. रविशंकर अपने संकाय साथियों, स्टाफ सदस्यों एवं विद्यार्थियों के बीच अत्यन्त लोकप्रिय रहे हैं।

श्री विनोद कुमार (26266), उप प्रशासिनक अधिकारी, सेन्सर्स इन्स्ट्रूमेन्टेशन एवं साइबर फिजिकल सिस्टम इंजीनियरी केन्द्र (SeNSE)

श्री विनोद कुमार ने 18.05.1992 को संस्थान में अवर श्रेणी लिपिक (भंडार) के रूप में कार्यभार ग्रहण किया गया था। 01.05.1998 को आर.सी.पी.एस. के अन्तर्गत आपको वरिष्ठ सहायक के रूप में मैप किया गया। 10.06.2004 को इसी योजना के अन्तर्गत आपको कनिष्ठ अधीक्षक के रूप में पदोन्नत किया गया। 18.05.2012 में आपको एम.ए.सी.पी. के अन्तर्गत तथा 18.05.2022 को आर.आर. के अन्तर्गत उन्नयन दिया गया। 22.12.2022 को आर. ऐन्ड पी.आर.एस. के अन्तर्गत आपको सहायक प्रशासनिक अधिकारी के रूप में पुनर्पदनामित किया गया तथा 22.02.2023 को इसी योजना में डी.पी.सी. के अन्तर्गत उप प्रशासनिक अधिकारी के रूप में पदोन्नत किया गया। सौम्य एवं विनम्र स्वभाव के श्री विनोद कुमार एक योग्य एवं कर्मठ उप प्रशासनिक अधिकारी रहे हैं।

संस्थान समुदाय उपरोक्त संकाय एवं स्टाफ सदस्यों को भावभीनी विदाई देते हुए उनके एवं उनके परिवार के लिए सुख, समृद्धि एवं शांतिमय जीवन की कामना करता है।

सत्र 2021–2022 का रेबा एवं प्रणब चटर्जी उत्कृष्टता अवार्ड

रासायनिक इंजीनियरी विभाग में एम. टेक. विद्यार्थी **श्री सार्थक रॉय** प्रविष्टि सं. 2021CHE2563 को रासायनिक इंजीनियरी विभाग ने एम.टेक. के प्रथम वर्ष के छात्रों में उच्चतम सीजीपीए प्राप्त करने पर ''रेबा तथा प्रणब चटर्जी उत्कृष्टता अवार्ड'' के लिए चयनित किया गया है।

श्री सार्थक रॉय को एक प्रमाणपत्र के साथ 25,000/–रु. की राशि प्रदान की जाएगी। यह अवार्ड रासायनिक इंजीनियरी विभाग द्वारा आयोजित कार्यक्रम में प्रदान किया जाएगा।

त्यागपत्र स्वीकृत

- स्थापना अनुभाग–I से प्राप्त विज्ञप्ति सं. IITD/IESI/U-3/024//231672 दिनांक 08.01.2024 के अनुसार **प्रो. दीपक कुमार अग्रवाल,** सहायक प्रोफेसर (ग्रेड-I) (जैव चिकित्सा इंजीनियरी केन्द्र) ने अपने पद से त्यागपत्र का अनुरोध किया था। जिसे सक्षम प्राधिकारी ने 08.01.2024 से स्वीकार कर लिया है। अतः प्रो. दीपक कुमार अग्रवाल को 08.01.2024 से संस्थान कार्य से मुक्त कर दिया गया हैं।
- स्थापना अनुभाग–II से प्राप्त विज्ञप्ति सं. IITD/E-2/024//232770 दिनांक 10.01.2024 के अनुसार **श्री प्रकाश शर्मा,** तकनीकी सहायक (रासायनिक इंजीनियरी विभाग) ने अपने पद से त्यागपत्र का अनुरोध किया था। जिसे सक्षम प्राधिकारी ने 10.01.2024 से स्वीकार कर लिया है। अतः श्री प्रकाश शर्मा को 10.01.2024 से संस्थान कार्य से मुक्त कर दिया गया हैं।
- स्थापना अनुभाग–II से प्राप्त विज्ञप्ति सं. IITD/E-2/024//235823 दिनांक 18.01.2024 के अनुसार **सुश्री पूजा शर्मा,** प्रशासनिक सहायक (करियर सेवाएं कार्यालय) ने अपने पद से त्यागपत्र का अनुरोध किया था। जिसे सक्षम प्राधिकारी ने 18.01.2024 से स्वीकार कर लिया है। अतः सुश्री पूजा शर्मा को 18.01.2024 से संस्थान कार्य से मुक्त कर दिया गया हैं।
- स्थापना अनुभाग–II से प्राप्त विज्ञप्ति सं. IITD/E-2/024//234856 दिनांक 16.01.2024 के अनुसार **सुश्री निशा कुमारी,** पुस्तकालय सूचना सहायक (केन्द्रीय पुस्तकालय) ने अपने पद से त्यागपत्र का अनुरोध किया था। जिसे सक्षम प्राधिकारी ने 16.01.2024 से स्वीकार कर लिया है। अतः सुश्री निशा कुमारी को 16.01.2024 से संस्थान कार्य से मुक्त कर दिया गया हैं।

स्नातकपूर्व अनुसंधान अवसर कार्यक्रम (UROP) द्वारा ग्रीष्मकालीन स्नातकपूर्व अनुसंधान अवार्ड (SURA) 2024 के लिए प्रोजेक्ट प्रस्ताव आमंत्रित

छात्रों में अनुसंधान एवं विकास गतिविधियों को प्रोत्साहन देने के लिए औद्योगिक अनुसंधान एवं विकास एकक द्वारा स्नातकपूर्व छात्रों से वर्ष 2024 के लिए प्रोजक्ट प्रस्ताव आमंत्रित किए जाते हैं। ***छात्रों को सोचने, नया करने तथा अनुभव प्राप्त करने के लिए प्रोत्साहित करने की मार्गदर्शन भावना इस परियोजना (SURA) में निहित है। छात्रों को समस्याएं पहचानने, अध्ययन करने तथा विश्लेषण करने के साथ–साथ समाधान तैयार करना चाहिए।*** छात्रों को प्रस्तावित अनुसंधान एवं विकास के क्षेत्र में सुविधाप्रदाता के रूप में कार्य करने के लिए संस्थान के विभाग/केन्द्र के किसी संकाय सदस्य की पहचान कर लेनी चाहिए।

अवार्ड प्रदान करने हेतु दिशा–निर्देश

पात्रता:–केवल स्नातकपूर्व बोर्ड द्वारा शासित स्नातकपूर्व छात्र (चतुर्थ सत्रार्ध) अवार्ड के पात्र हैं। इस योजना (SURA) के अन्तर्गत प्रोजेक्ट प्रस्ताव प्रस्तुत करने वाले छात्रों का CGPA 7.50 या इससे अधिक होना चाहिए।

अवार्ड:– अवार्ड में 1500/रुपए की राशि प्रति सप्ताह प्रति छात्र की दर से दी जाएगी।

अवधि:– ग्रीष्म दीर्घावकाश के दौरान आठ सप्ताह। प्रोजेक्ट कार्य पूरा करने के लिए यदि समयवृद्धि की आवश्यकता हो तो इसे अधिकतम 16 अक्टूबर, 2024 तक बढ़ाया जा सकता है। प्रगति रिपोर्ट अक्टूबर, 2024 के अंत तक प्रस्तुत की जाएगी। बढ़ाई गई अवधि के लिए कोई पारिश्रमिक नहीं दिया जाएगा।

आवेदन कैसे करें:– इच्छुक छात्र अपने प्रस्तावित अनुसंधान विकास प्रोजेक्ट पर अपने सुविधा प्रदाता से विचार–विमर्श कर सकते हैं तथा निम्नलिखित विवरण का समावेश करते हुए प्रोजेक्ट प्रस्ताव प्रस्तुत करें:

1. प्रोजेक्ट का शीर्षक
2. छात्र का नाम, विभाग, प्रविष्टि सं., सम्पर्क सं. तथा सी.जी.पी.ए. और सुविधाप्रदाता के नाम

(प्रस्ताव के आवरण पृष्ठ पर भी उल्लेख करें।)

3. उद्देश्य
4. प्रस्तावित अनुसंधान एवं विकास परियोजना का दृष्टिकोण (प्रस्ताव में कार्य का नवीनता पक्ष स्पष्ट होना चाहिए)।
5. प्रस्तावित प्रोजेक्ट कार्य करने के लिए आवश्यक बजट, अवधि एवं सुविधाएं (बजट 25,000/–रुपए प्रति प्रोजेक्ट तक हो सकता है)।

टिप्पणी: प्रस्ताव अकेले छात्र द्वारा अथवा अधिकतम दो छात्रों द्वारा प्रस्तुत किया जा सकता है। **हालांकि, एक से अधिक SURA प्रस्ताव सुविधा प्रदाता के रूप में किसी संकाय सदस्य के माध्यम से अग्रेषित किए जाते हैं, लेकिन एक संकाय सदस्य की सुविधा के अधीन केवल एक SURA परियोजना प्रदान की जाएगी।**

प्रस्ताव टाइप की हुई प्रति (Hard copy) और सॉफ्ट कापी दोनों प्रकार से प्रस्तुत किया जाना चाहिए। प्रोजेक्ट प्रस्ताव छात्र के संबंधित सुविधा प्रदाता तथा विभाग/केन्द्र के अध्यक्ष और औद्योगिक अनुसंधान एवं विकास एकक के सुविधा प्रदाता के संबंधित विभाग/केन्द्र अध्यक्ष के माध्यम से (जिल्दबंद रूप में किन्तु बिना प्लास्टिक भीट कवर के) प्रस्तुत किए जाएंगे। E-mail द्वारा सॉफ्टकॉपी rajnikapoor2711@gmail.com पर भेजी जानी चाहिए। सुविधा प्रदाता को ग्रीष्मकालीन दीर्घावकाश के अधिकांश समय उपलब्ध होना चाहिए। निदेशक की ओर से संकायाध्यक्ष, औद्योगिक अनुसन्धान एवं विकास द्वारा गठित समिति अवार्ड के प्रस्तावों की जांच करेगी।

SURA 2024 से संबंधित गतिविधियों का कार्यक्रम निम्नानुसार है:

1. प्रोजेक्ट प्रस्ताव प्रस्तुत करना–**26 फरवरी, 2024**
2. समिति के समक्ष विद्यार्थी द्वारा प्रस्ताव का प्रस्तुतीकरण–**अप्रैल, 2024 (अनंतिम)**
3. अवार्ड की घोषणा–**प्रस्तुतीकरण के एक सप्ताह बाद**
4. प्रगति रिपोर्ट प्रस्तुत करना–**प्रोजेक्ट की स्वीकृत अवधि के पश्चात् दो सप्ताह के अन्दर (अधिकतम 23 अक्टूबर, 2024 तक)**

अवार्ड प्राप्तकर्ता इस अवार्ड के अन्तर्गत किए गए प्रोजेक्ट कार्य को संस्थान/ विभाग/केन्द्र में बाद में किसी तारीख को प्रस्तुत करेंगे।

साध्य से महत्वपूर्ण साधन

हमारी नजर साध्य (लक्ष्य) पर रहती है, साधनों पर नहीं। यदि हमारे साधन बिल्कुल ठीक है, तो साध्य की प्राप्ति होगी ही।

स्वामी विवेकानंद का चिंतन.....

अपने जीवन में मैने जो एक श्रेष्ठतम पाठ सीखा, वह यह है कि किसी भी कार्य के साधनों के विषय में उतना ही सावधान रहना चाहिए, जितना कि उसके लक्ष्य के विषय में। जिनसे मैंने यह बात सीखी, वे एक बड़े महात्मा थे। यह महान तत्व स्वयं उनके जीवन में प्रत्यक्ष कार्यरूप में परिणत हुआ था। इस एक तत्व से मैं सर्वदा बड़े–बड़े पाठ सीखता आया हूं। मेरा यह मत है कि सब प्रकार की सफलताओं की कुंजी इसी तत्व में है–साधनों की ओर भी उतना ही ध्यान देना आवश्यक है, जितना कि साध्य की ओर।

हमारे जीवन में एक बड़ा दोष यह है कि हम साध्य (लक्ष्य) पर ही अधिक ध्यान दिया करते हैं। हमारे लिए लक्ष्य अधिक आकर्षक होता है। यह मोहक होता है। हमारे मन पर इतना प्रभाव डालता है कि उसकी प्राप्ति के साधनों की बारीकियां हमारी नजर से निकल जाती हैं।

लेकिन कभी विफलता मिलने पर हम यदि बारीकी से उसकी छानबीन करें, तो निन्यानबे प्रतिशत यही पाएंगे कि उसका कारण था हमारा साधनों की ओर ध्यान न देना। हमें आवश्यकता है अपने साधनों को मजबूत बनाने की। इन्हें पूर्ण रूप से कार्यक्षम करने के लिए उनकी ओर अधिक ध्यान देने की। यदि हमारे साधन बिल्कुल ठीक है, तो साध्य की प्राप्ति आवश्यक होगी।

अक्सर हम यह भूल जाते हैं कि कारण ही कार्य का जन्मदाता है, कार्य कभी अपने आप पैदा नहीं हो सकता। जब तक कारण बिल्कुल ठीक, योग्य और सक्षम न हों, कार्य की उत्पत्ति नहीं होगी। एक बार हमने ध्येय निश्चित कर लिया और उसके साधन पक्के कर लिए, तब फिर हम ध्येय को लगभग छोड़ सकते हैं। कारण यह है कि ऐसी स्थिति में हमें यह अच्छी तरह मालूम होता है कि अगर साधन दोषहीन है, तो साध्य कहीं नहीं जाएगा। उसे आना ही है। जब कारण विद्यमान है, तो कार्य की उत्पत्ति होगी ही। उसके बारे में विशेष चिंता की कोई आवश्यकता नहीं।

यदि कारण के विषय में हम सावधान रहें, तो कार्य स्वयं आ ही जाएगा। कार्य है ध्येय की सिद्धि और कारण है साधन। इसलिए साधन की ओर ध्यान देते रहना जीवन का एक बड़ा रहस्य है। गीता में भी हमने यही पढ़ा और सीखा है कि हमें लगातार अपनी पूरी ताकत से काम करते ही जाना चाहिए। काम चाहे कोई भी हो, हमें अपना पूरा मन उस ओर लगा देना चाहिए। लेकिन साथ ही यह भी ध्यान रहे कि हम उस कार्य में आसक्त न हो जाएं। अर्थात अपने कर्म से किसी भी विषय द्वारा हमारा ध्यान न हटें, फिर भी हममें इतनी शक्ति हो कि हम इच्छानुसार उस कर्म को छोड़ भी सके। यही अनासक्त कर्म है।

साभार–दैनिक जागरण
दिनांक 11.12.2013

हिन्दी कक्ष द्वारा सम्पादित एवं प्रकाशित दूरभाष: EPABX 7144

मुद्रक: सागर प्रिंटर्स एंड पब्लिशर्स, नई दिल्ली। ई–मेल: sagarprinters@gmail.com